

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 1: राजा सुद्युम्न

13 September 2026



कल्प के अन्त में जब केवल परम पुरुष ही जल पर शेष रह जाते हैं — तब उनकी नाभि से एक स्वर्णिम कमल प्रकट होता है, जिस पर ब्रह्माजी विराजते हैं; वही समस्त राजवंशों के अदृश्य उद्गम हैं, जिनकी कथा नवम स्कन्ध अब कहने जा रहा है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञप्ति में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और उपदेशों के माध्यम से एक भक्तिपूर्ण यात्रा। इस अध्याय से नवम स्कन्ध का आरम्भ होता है — पृथ्वी के श्रेष्ठतम राजाओं का महान वंश-इतिहास — जिसमें शुकदेवजी उस वंश को उसके मूल स्रोत परम पुरुष तक ले जाते हैं और फिर मनु की पुत्री इला की विचित्र एवं मार्मिक कथा कहते हैं, जो राजकुमार सुद्युम्न बनी।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 1 (प्रथम अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: राजा सुद्युम्न की कथा
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — और यह समस्त वृत्तान्त सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषि-समुदाय को सुनाया गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: गंगा-तट, जहाँ शुकदेवजी अपने अन्तिम दिनों में परीक्षित को उपदेश दे रहे हैं; कथा स्वयं आदि कारण-जल से लेकर गंगा-यमुना के संगम पर स्थित प्रतिष्ठान नगर तक विस्तृत है
- केन्द्रीय विषय: नवम स्कन्ध के वंश-इतिहास का प्रारम्भ — वैवस्वत मनु के वंश का भगवान् नारायण से अवतरण, और मनु की सन्तान सुद्युम्न की कथा, जो कन्या रूप में जन्मी और राजकुमार में परिवर्तित हुई
- मुख्य श्लोक-सीमा: नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 1-42
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

परीक्षित की जिज्ञासा

नवम स्कन्ध का आरम्भ एक ऐसे श्रोता की उत्सुक जिज्ञासा से होता है, जो बहुत कुछ सुन चुका है और और भी सुनने को लालायित है। राजा परीक्षित, अपने अन्तिम दिनों में शुकदेवजी के समक्ष बैठे हुए, ऋषि को स्मरण कराते हैं कि उन्हें समस्त मन्वन्तरों के वृत्तान्त और उनमें श्रीहरि द्वारा किए गए वीरतापूर्ण कार्य सुनाए जा चुके हैं। उन्होंने यह भी सुना है कि किस प्रकार द्रविड़ देश के अधिपति राजर्षि सत्यव्रत, जिन्होंने पूर्व कल्प के अन्त में भगवान् की भक्ति से ज्ञान प्राप्त किया था, सूर्य के पुत्र श्राद्धदेव के रूप में पुनः जन्म लेकर इस युग के मनु हुए। अब परीक्षित आगे का वृत्तान्त सुनना चाहते हैं — इक्ष्वाकु तथा अन्य राजाओं का वंश, और उन राजाओं के कार्य जो हो चुके हैं, हो रहे हैं, और आगे होंगे।

श्रीराजोवाच

मन्वन्तराणि सर्वाणि त्वयोक्तानि श्रुतानि मे ।

वीर्याण्यनन्तवीर्यस्य हरेस्तत्र कृतानि च ॥ १ ॥

śrī-rājovāca manvantarāṇi sarvāṇi tvayoktāni śrutāni me vīryāṇy ananta-vīryasya haresh tatra kṛtāni ca

अर्थ: राजा परीक्षित ने कहा — समस्त मन्वन्तरों तथा उनमें अनन्त पराक्रमी श्रीहरि द्वारा किए गए महान कार्यों को, जैसा आपने वर्णन किया, वैसा ही मैंने सुन लिया है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 1)

भगवान् की नाभि से

शुकदेवजी अपना उत्तर किसी राजा से नहीं, अपितु परम पुरुष से आरम्भ करते हैं। वे कहते हैं कि मनु का वंश इतना विशाल है कि उसका पूर्ण वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी सम्भव नहीं; अतः वे उसके सारभूत अंशों का ही वर्णन करेंगे। फिर वे इस समस्त वंश का उद्गम सृष्टि के आदि में ही स्थापित करते हैं। महाप्रलय के समय, जब समस्त विश्व समेट लिया गया, तब केवल भगवान् नारायण ही शेष रहे — समस्त उच्च-नीच प्राणियों के अन्तर्यामी और आधार; अन्य कुछ भी विद्यमान न था।

परावरेषां भूतानामात्मा यः पुरुषः परः ।
स एवासीदिदं विश्वं कल्पान्तेऽन्यत्र किञ्चन ॥ ८ ॥

parāvareṣāṁ bhūtānām ātmā yaḥ puruṣaḥ paraḥ sa evāsīd idam viśvaṁ kalpānte 'nyan na kiñcana

अर्थ: जो समस्त उच्च और निम्न प्राणियों के आत्मा एवं परम पुरुष हैं, कल्प के अन्त में केवल वे ही इस विश्व के रूप में शेष रहे; अन्य कुछ भी विद्यमान न था। (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 8)

उन शयन करते हुए भगवान् की नाभि से एक स्वर्णिम कमल-कोश प्रकट हुआ, और उसमें स्वयम्भू चतुर्मुख ब्रह्मा प्रकट हुए। यही समस्त वंशावली का उद्गम है, जिसे नवम स्कन्ध खोलने जा रहा है।

तस्य नाभेः समभवत् पद्मकोषो हिरण्मयः ।
तस्मिञ्जज्ञे महाराज स्वयम्भूश्चतुराननः ॥ ९ ॥

tasya nābheḥ samabhavat padma-koṣo hiraṇmayāḥ tasmīṁ jajñe mahārāja svayambhūś catur-ānanaḥ

अर्थ: उनकी नाभि से एक स्वर्णिम कमल-कोश प्रकट हुआ, और हे महाराज, उस कोश में स्वयम्भू चतुर्मुख ब्रह्मा प्रकट हुए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 9)

ब्रह्मा के मन से मरीचि ऋषि उत्पन्न हुए; मरीचि से कश्यप हुए; और कश्यप से, दक्ष की पुत्री अदिति के गर्भ से, सूर्यदेव विवस्वान् उत्पन्न हुए। विवस्वान् से उनकी पत्नी संज्ञा के गर्भ से श्राद्धदेव — इस युग के मनु — उत्पन्न हुए। इस प्रकार, कुछ ही शीघ्र चरणों में, शुकदेवजी परीक्षित को कारण-जल से लेकर वंश के जनक तक ले आते हैं।

मनु के दस पुत्र

अपनी पत्नी श्रद्धा के द्वारा जितेन्द्रिय मनु श्राद्धदेव ने दस पुत्र उत्पन्न किए — उन राजकुलों के बीज-पुरुष, जिनके भाग्य का वर्णन नवम स्कन्ध करेगा।



चूँकि मनु पहले पुत्रहीन थे, अतः ऋषि वसिष्ठ उस निःसन्तान राजा को पुत्र-प्राप्ति के लिए मित्र और वरुण देवताओं के निमित्त यज्ञ करवाते हैं (श्लोक 13-15)।

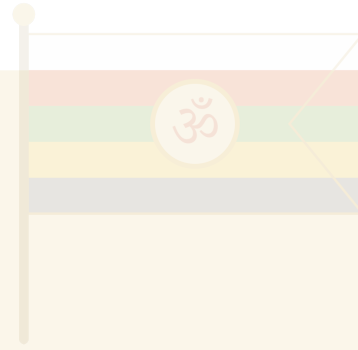
उनके नाम आगे श्लोक में पूर्ण रूप से दिए गए हैं — इनमें अग्रणी इक्ष्वाकु हैं, जिनके माध्यम से भागवत सूर्यवंश के महानतम राजाओं की परम्परा का वर्णन करता है।

ततो मनुः श्राद्धदेवः संज्ञायामास भारत ।

श्रद्धायां जनयामास दश पुत्रान् स आत्मवान् ॥ ११ ॥

इक्ष्वाकुनृगशर्यातिदिष्टधृष्टकरुषकान् ।

नरिष्यन्तं पृषध्नं च नभगं च कविं विभुः ॥ १२ ॥



tato manuḥ śrāddhadevaḥ sañjñāyām āsa bhārata śraddhāyām janayām āsa daśa putrān sa ātmavān ikṣvāku-nṛga-śaryāti- diṣṭa-dhṛṣṭa-karūṣakān nariṣyantaṁ pṛṣadhraṁ ca nabhagaṁ ca kaviṁ vibhuḥ

अर्थ: तत्पश्चात् हे भरतवंशी, जितेन्द्रिय मनु श्राद्धदेव ने अपनी पत्नी श्रद्धा के द्वारा दस पुत्र उत्पन्न किए — इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति, दिष्ट, धृष्ट, करुषक, नरिष्यन्त, पृषध्न, नभग और कवि। (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 11-12)

पुत्र के स्थान पर कन्या

किन्तु इन पुत्रों के जन्म से पूर्व मनु निःसन्तान थे, और यहीं से इस अध्याय की केन्द्रीय कथा आरम्भ होती है। सूर्यवंश के आचार्य ऋषि वसिष्ठ ने राजा को पुत्र दिलाने के लिए मित्र और वरुण के निमित्त एक यज्ञ आरम्भ किया। किन्तु मनु की रानी श्रद्धा, जो व्रत का पालन करती हुई केवल दूध पर निर्वाह कर रही थीं, धीरे से यज्ञ करा रहे होता के पास पहुँचीं और प्रणाम करके प्रार्थना की कि वे ऐसा अनुष्ठान करें जिससे कन्या का जन्म हो। निर्णायक क्षण में, जब आहुति अग्नि में डाली जानी थी, तब होता का मन — रानी की उस प्रार्थना में उलझा हुआ — उसी इच्छा से प्रभावित हो गया। इस विचलन के कारण जो सन्तान उत्पन्न हुई वह कन्या थी, जिसका नाम इला रखा गया।

मनु प्रसन्न न हुए। उन्होंने अपने आचार्य से पूछा कि ऐसे संयमी, तप से शुद्ध हुए वेदज्ञ, जिनके वचन देवताओं के वचन के समान कभी असफल नहीं होते, उनका संकल्प कैसे भटक सकता है — यह तो वास्तव में शोक का विषय है। यह सुनकर वसिष्ठ ने न तो वेद को दोष दिया और न देवताओं को; उन्होंने दोष को यथार्थ रूप से पहचाना — होता के अपने ध्यान में, जो क्षण-भर के लिए रानी की निजी प्रार्थना की ओर मुड़ गया था।

एतत् सङ्कल्पवैषम्यं होतुस्ते व्यभिचारतः ।

तथापि साधयिष्ये ते सुप्रजास्त्वं स्वतेजसा ॥ २० ॥

etat saṅkalpa-vaiṣamyam hotus te vyabhicārataḥ tathāpi sādhayiṣye te suprajāstvam sva-tejasā

अर्थ: यह असमानता परिणाम में केवल तुम्हारे होता के संकल्प की डाँवाडोल स्थिति के कारण ही आई है; फिर भी, अपने ही तेज से मैं तुम्हें तुम्हारे वंश के योग्य पुत्र अवश्य प्रदान करूँगा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 20)

इस छोटे-से घरेलू प्रसंग में एक बड़ा उपदेश छिपा है। वैदिक यज्ञ कोई स्वतः चलने वाला यन्त्र नहीं, जिसे प्रज्वलित करते ही अनिवार्यतः फल मिल जाए; उसका परिणाम अब भी यज्ञ करने वाले के संकल्प से होकर गुज़रता है, और उससे भी आगे, उस भगवान् की स्वीकृति से, जिनका ही समस्त यज्ञ अन्ततः है। वसिष्ठ पुनः उसी विधि का सहारा नहीं लेते — वे अपने तप का दाँव लगाकर विषय को सुधारने का संकल्प लेते हैं, और, जैसा आगे के श्लोकों में दिखेगा, प्रार्थना में उन्हीं परम पुरुष की ओर मुड़ते हैं, जिनसे समस्त यज्ञ अपनी शक्ति पाता है।

वसिष्ठ की प्रार्थना और सुद्युम्न का जन्म

अपने वचन के अनुरूप, तेजस्वी वसिष्ठ ने आदि पुरुष भगवान् विष्णु की स्तुति की, यह प्रार्थना करते हुए कि कन्या इला पुरुष रूप में परिवर्तित हो जाए। ऋषि पर प्रसन्न होकर सर्वशक्तिमान् श्रीहरि ने वह वरदान दिया — और इस प्रकार वैवस्वत मनु की पुत्री इला, पुरुषों में श्रेष्ठ सुद्युम्न बन गई। इस शान्त चमत्कार में अध्याय अपना पहला महान भाव प्रकट करता है: यज्ञ की यान्त्रिक विधि नहीं, अपितु किसी शुद्ध भक्त की प्रार्थना से आमन्त्रित भगवान् की कृपा ही अन्ततः परिणाम को गढ़ती है।





ऋषि वसिष्ठ भगवान् विष्णु की स्तुति करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि बालिका इला को पुरुषत्व प्राप्त हो; प्रसन्न होकर भगवान् वह वरदान देते हैं, और इला राजकुमार सुद्युम्न बन जाती है (श्लोक 20-22)।

मेरु के तल पर मोहित करने वाला वन

एक दिन युवा राजकुमार सुद्युम्न, उत्तम धनुष और अद्भुत बाणों से सुसज्जित, कवच धारण किए और कुछ अनुचरों के साथ, एक सैन्धव घोड़े पर सवार होकर आखेट के लिए निकला और उत्तर दिशा की ओर घने वन में बढ़ता गया। मृग का पीछा करते हुए वह सुमेरु पर्वत के तल पर स्थित उस वन में प्रवेश कर गया — वही उपवन जहाँ भगवान् रुद्र देवी उमा के साथ प्रेम-लीला में लीन थे। ज्यों ही सुद्युम्न ने उस वन में पग रखा, उसने स्वयं को स्त्री में परिवर्तित पाया, और उसका घोड़ा घोड़ी बन गया; और उसके सभी अनुचर भी वैसे ही बदल कर एक-दूसरे को स्तब्ध होकर देखने लगे।

तस्मिन् प्रविष्ट एवासौ सुद्युम्नः परवीरहा ।

अपश्यत् स्त्रियमात्मानमश्वं च वडवां नृप ॥ २६ ॥

tasmin praviṣṭa evāsau sudyumnaḥ para-vīra-hā apaśyat striyam ātmānam aśvaṁ ca vaḍavāṁ nṛpa

अर्थ: हे राजन्, उस वन में प्रवेश करते ही शत्रुवीरों का संहारक सुद्युम्न स्वयं को स्त्री और अपने घोड़े को घोड़ी के रूप में देखने लगा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 26)



अपने सैन्धव घोड़े पर उत्तर दिशा में आखेट करता हुआ राजकुमार सुद्युम्न सुमेरु पर्वत के तल पर स्थित पवित्र उपवन में प्रवेश करता है (श्लोक 23-26)।

चकित होकर परीक्षित बीच में ही पूछते हैं कि किसी भूमि में ऐसी विचित्र शक्ति कैसे हो सकती है, और इसे किसने ऐसा बनाया। शुकदेवजी इसका कारण बताते हैं। एक बार पवित्र व्रतधारी ऋषिगण भगवान् शिव के दर्शन के लिए उस उपवन में आए थे, उनका तेज समस्त अन्धकार को दूर कर रहा था। देवी पार्वती अकस्मात् चौंककर अपने पति के पार्श्व से उठ खड़ी हुई और शीघ्रता से अपने वस्त्र धारण किए; और ऋषिगण, दिव्य दम्पति को उनके एकान्त में लीन देखकर, तुरन्त नर-नारायण के आश्रम को लौट गए। अपनी प्रियतमा को किसी और व्यवधान से बचाने के लिए भगवान् शिव ने तब घोषणा की कि जो भी पुरुष उस वन में प्रवेश करेगा, वह उसी क्षण से स्त्री बन जाएगा। उस दिन से पुरुषों ने उस उपवन को त्याग दिया — और इसी वन में अनजाने ही सुद्युम्न प्रवेश कर गया था।

बुध, पुरुरवा, और एक पुनःस्थापित राज्य

स्त्री रूप में परिवर्तित होकर सुद्युम्न अपनी सहचरियों के साथ एक उपवन से दूसरे उपवन में विचरण करने लगी। अपने आश्रम के निकट, चन्द्रमा के पुत्र और बुध ग्रह के अधिष्ठाता देव बुध ने इस सुन्दर स्त्री को देखा और उस पर मोहित हो गए; उसने भी उन्हें पति रूप में चाहा, और उनके संयोग से एक पुत्र पुरुरवा उत्पन्न हुआ। इस परिवर्तित जीवन के मध्य भी दिव्य योजना शान्त रूप से आगे बढ़ रही थी: वह बालक पुरुरवा एक महान वंश का प्रवर्तक बनने वाला था।



आश्रम के उपवन में, चन्द्रमा के पुत्र देव बुध का परिवर्तित सुद्युम्न से संयोग होता है, और उनका पुत्र पुरुरवा — एक महान वंश का प्रवर्तक — उत्पन्न होता है (श्लोक 34-35)।

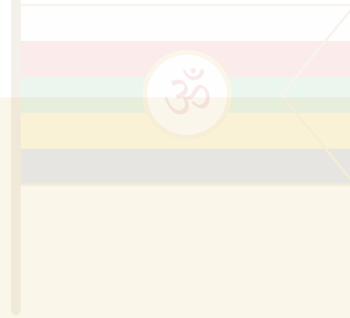
अन्ततः सुद्युम्न को वंश के आचार्य वसिष्ठ का स्मरण हुआ। राजकुमार की दशा पर करुणा से द्रवित होकर ऋषि ने पुनः भगवान् शंकर से सुद्युम्न के पुरुषत्व की पुनःस्थापना के लिए प्रार्थना की। वसिष्ठ पर प्रसन्न होते हुए, किन्तु अपने पूर्व वचन को असत्य न करना चाहते हुए, शिव ने एक मध्यम मार्ग प्रदान किया।

तुष्टस्तस्मै स भगवानृषये प्रियमावहन् ।

स्वां च वाचमृतां कुर्वन्निदमाह विशाम्पते ॥ ३८ ॥

मासं पुमान् स भविता मासं स्त्री तव गोत्रजः ।

इत्थं व्यवस्थया कामं सुद्युम्नोऽवतु मेदिनीम् ॥ ३९ ॥



tuṣṭas tasmai sa bhagavān ṛṣaye priyam āvahan svām ca vācam ṛtām kurvann idam āha viśāmpate māsaṁ pumān sa bhavitā māsaṁ strī tava gotrajaḥ itthaṁ vyavasthaya kāmam sudyumno 'vatu medinīm

अर्थ: हे नरेश्वर, प्रसन्न होकर और अपने वचन को सत्य रखते हुए भगवान् ने कहा — “आपका यह वंशज एक मास पुरुष और एक मास स्त्री रहेगा; इस व्यवस्था के अनुसार सुद्युम्न इच्छानुसार पृथ्वी का शासन करे।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 38-39)

अपने आचार्य की कृपा से सुद्युम्न ने पुनः अपना पुरुषत्व प्राप्त किया और पृथ्वी का शासन किया, यद्यपि — प्रत्येक दूसरे मास को लज्जावश एकान्त में व्यतीत करने के कारण — प्रजा उसे पूर्णतः स्वीकार न कर सकी। उसके तीन पुत्र हुए: उत्कल, गय और विमल, जो दक्षिण प्रदेश के धर्मात्मा शासक बने।

सुद्युम्न का वन-गमन

समय आने पर, प्रतिष्ठान के अधिपति — गंगा-यमुना के पवित्र संगम पर स्थित नगर के स्वामी — राजा सुद्युम्न ने पृथ्वी का राज्य अपने पुत्र पुरुरवा को सौंप दिया और वन को प्रस्थान किया, इस प्रकार एक ऐसा जीवन पूर्ण किया जो अत्यन्त विचित्र उलटफेरों से गुज़रा, किन्तु जिसका परिणाम सदैव भगवान् के हाथों में रहा।

ततः परिणते काले प्रतिष्ठानपतिः प्रभुः ।

पुरुरवस उत्सृज्य गां पुत्राय गतो वनम् ॥ ४२ ॥

tataḥ pariṇate kāle pratiṣṭhāna-patiḥ prabhuḥ purūravasa utsṛjya gāṁ putrāya gato vanam

अर्थ: तत्पश्चात्, समय आने पर, प्रतिष्ठान के अधिपति ने पृथ्वी को अपने पुत्र पुरुरवा को सौंपकर वन को प्रस्थान किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 1, श्लोक 42)



प्रतिष्ठान का राज्य अपने पुत्र पुरुरवा को सौंपकर वृद्ध सुद्युम्न सिंहासन का त्याग करते हैं और अपने शेष दिन भक्ति में बिताने के लिए वन को प्रस्थान करते हैं (श्लोक 42)।

इस अध्याय के प्रमुख उपदेश

1. प्रत्येक वंश और प्रत्येक जीवन भगवान् तक ही जाता है। शुकदेवजी राजाओं के विषय में पूछे गए प्रश्न का उत्तर नारायण और कमल-जन्मा ब्रह्मा से आरम्भ करते हैं — यह स्मरण कराते हुए कि कोई भी वंश, चाहे कितना ही गौरवशाली क्यों न हो, स्वयंनिर्मित नहीं; सब एक परम पुरुष से ही प्रवाहित होते हैं (श्लोक 8-10)।
2. परिणाम कृपा से निश्चित होता है, यन्त्र-विधि से नहीं। पुत्र के लिए किया गया यज्ञ होता के विभाजित संकल्प के कारण कन्या दे बैठा; अन्ततः वसिष्ठ की प्रार्थना से आमन्त्रित भगवान् की कृपा ने ही अभीष्ट फल प्रदान किया (श्लोक 13-22)।

3. भक्त का वचन सम्मानित होता है, चाहे परिस्थितियाँ विपरीत क्यों न हों। वसिष्ठ दो बार हस्तक्षेप करते हैं — एक बार मनु को पुत्र दिलाने के लिए, एक बार सुद्युम्न का पुरुषत्व लौटाने के लिए — और प्रत्येक बार भगवान्, पहले विष्णु और फिर शिव, ऋषि की इच्छा को पूर्ण करते हैं (श्लोक 20-22, 37-39)।

4. दिव्य इच्छा अत्यन्त विचित्र उलटफेरों के माध्यम से भी कार्य करती है। सुद्युम्न का परिवर्तन, मात्र एक आश्चर्य न रहकर, वह माध्यम बन जाता है जिससे पुरुरवा — एक महान वंश का पूर्वज — उत्पन्न होता है (श्लोक 34-35)।

5. सच्चा राजत्व वैराग्य में समाप्त होता है। भागवत के आदर्श शासकों की भाँति, सुद्युम्न अन्ततः अपना राज्य अपने उत्तराधिकारी को सौंपकर वन को प्रस्थान करता है, अन्त तक अपनी सत्ता को भार समझकर हल्के-से थामे हुए (श्लोक 42)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय के उत्तर देने की रीति में कुछ गहन आश्वासन है। परीक्षित वंश के विषय में पूछते हैं; शुकदेवजी उत्तर देते हैं पहले कारण-जल की ओर संकेत करके, उन भगवान् की ओर जिन पर सब कुछ टिका रहता है जब सब कुछ लीन हो चुका होता है। मानो कह रहे हों: पीढ़ियों को गिनने से पहले, उनके स्रोत को स्मरण करो। और फिर जो कथा आती है — एक यज्ञ जो “उल्टा” पड़ता है, एक राजकुमार जो स्त्री बन जाता है, एक स्त्री जो माता बन जाती है, एक माता जो पुनः पुरुष हो जाती है — वह जीवन को किसी ऐसी मशीन के रूप में पढ़ने के हर प्रयास को अस्वीकार कर देती है जो पूर्वानुमेय परिणाम देती हो। हर मोड़ पर, जो दुर्घटना या दुर्भाग्य प्रतीत होता है, वह दिव्य योजना को ही आगे बढ़ाता निकलता है: वही कन्या जिसे कोई नहीं चाहता था, पुरुरवा के माध्यम से एक वंश की पूर्वज बन जाती है। भक्त के लिए यह चंचलता की कथा नहीं, अपितु विश्वास की कथा है। हमारी अपनी सावधानी से रची योजनाओं के परिणाम अन्ततः हमारे हाथों में नहीं; वे उसी भगवान् के अधीन हैं जिनकी नाभि से समस्त सृष्टि का कमल पहली बार खिला था।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज अपनी कोई एक ऐसी योजना या आशा लीजिए जो आपके अभीष्ट के अनुसार पूर्ण नहीं हुई — कोई निराशा, कोई असफलता, कोई बन्द हो गया द्वार। जो कुछ गलत हुआ उसे बार-बार दोहराने के स्थान पर, कुछ मिनट शान्त बैठिए और उसे भगवान् को अर्पित कीजिए, जैसे वसिष्ठ ने मनु की कठिनाई भगवान् को अर्पित की थी। धीरे से दोहराइए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” इस अध्याय के इस शान्त उपदेश को हृदय में बैठने दीजिए — कि वही हाथ, जिसने एक निःसन्तान राजा की निराशा को एक महान वंश के बीज में बदल दिया, आपके अपने जीवन के उलटफेरों में भी अदृश्य रूप से कार्य कर रहा है।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का प्रथम अध्याय भागवत के वंश-इतिहास का आरम्भ आडम्बर से नहीं, अपितु दृष्टि से करता है: किसी राजा का नाम लेने से पहले ही शुकदेवजी समस्त वंशावली को भगवान् नारायण में स्थापित करते हैं, जिनकी नाभि से सृष्टि का कमल पहली बार प्रकट हुआ। इसके बाद आने वाली सुद्युम्न की कथा उसी भाव को लघु रूप में दर्शाती है — ऐसा जीवन जो इतने विचित्र उलटफेरों से गुज़रा कि उन्हें एक ही सूत्र जोड़े रखता है: भगवान् की इच्छा का निरन्तर, शान्त कार्य। यह नवम स्कन्ध के लिए एक उत्तम प्रवेश-द्वार है, जो हमें आगे आने वाले प्रत्येक राजवृत्तान्त को मानवीय उपलब्धि के अभिलेख के रूप में नहीं, अपितु पृथ्वी की पीढ़ियों के माध्यम से प्रकट होती दिव्य कृपा के अभिलेख के रूप में पढ़ना सिखाती है।

श्रीमद्भागवत का यह दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), नवम स्कन्ध, प्रथम अध्याय, पृष्ठ 1–4।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बद्धता या उसके अनुमोदन का दावा नहीं किया गया है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-1-the-story-of-king-sudyumna-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट